DOIs:10.2018/SS/202410007 --:-- Research Paper / Article / Review

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय शास्त्रीय संगीत के सन्दर्भ में नए मंचों का उदय

सीमा जौहरी
सह आचार्य,संगीत स्कूल ऑफ परफॉर्मींनग एण्ड विजुएल आर्ट्स , इग्नू.
Email - dr.seemajohari@ignou.ac.in

शोध सारांश : *भारतीय शास्त्रीय संगीत युगों-युगों से लगातार खुद को नया रूप दे रहा है और उसकी नई व्याख्या कर रहा है।विभिन्न कारक, चाहे वह सांस्कृतिक प्रभाव हो या नई प्रौद्योगिकियों का विकास,संगीत सुनने व समझने वालों को प्रभावित करते हैं।भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रस्तुतियों और प्रदर्शनों के मामले में विकास हो रहा है|साथ ही इसकी संरचनागत संरचना समय के साथ विभिन्न संशोधनों से गुजरी है।वर्तमान सांगीतिक परिदृश्य पर इसके प्रभाव को जानने के लिए इन परिवर्तनों को स्वीकार करने और उनका अध्ययन करने की आवश्यकता है।*

भारतीय सभ्यता व संस्कृति को जवाहर लाल नेहरू ने 'विविधता में एकता'(Unity in Diversity)का नाम दिया है|निःसंदेह इस विस्मयकारी विशेषता ने भारतीय सभ्यता व संस्कृति को अमर बना दिया है जिसे देखकर कवि इक़बाल ने कहा है 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी|'संगीत को भारतीय संस्कृति का सर्वश्रेष्ठ प्रतीक कहा जा सकता है|ये इतिहास पूर्व युग से चला आ रहा है|देश के सभी क्षेत्रों में इसके अस्तित्व को देखा जा सकता है|भारतीय संगीत की उत्पत्ति वेदों में निहित मानी जाती है।वेदों में सामवेद संगीत परिचायक है|भारतीय संगीत को दिव्य माना जाता है और ऐसा कहा जाता है कि संगीतकार को सर्वोच्च सत्ता के साथ जुड़ने के लिए नाद ब्रह्म की उपासना करनी होती है।

इससे शास्त्रीय संगीत के भविष्य के विकास और संभावनाओं का अनुमान लगाने में भी मदद मिलती है,ताकि यह अपने विकास में और इजाफा कर सके और तेजी से बदलते समाज में अपनी व्यवहार्यता बरकरार रख सके।वर्तमान परिदृश्य में श्रोताओं और दर्शकों को ध्यान में रखते हुए तकनीकी सहायता और मीडिया समर्थन के कारण नए प्रदर्शन मंचों का जन्म हुआ है तथा स्वतंत्र संगीत और जन सहयोग को प्रोत्साहित किया गया है।नई प्रौद्योगिकियों के आगमन के साथ नए प्रदर्शन मंचों के उद्भव ने भारतीय शास्त्रीय संगीत पर प्रभाव डाला है|

भारतीय शास्त्रीय संगीत दुनिया की प्राचीनतम संगीत परंपरा है।यह हमारे समाज में सबसे प्रचलित शक्तियों में से एक रही है।भारतीय शास्त्रीय संगीत का इतिहास प्राचीन काल से है और आज भी इसका विकास जारी है।इसकी गतिशीलता और अनिवार्य रूप से तरल प्रकृति इसे अद्वितीय बनाती है।प्राचीन काल में इसकी रचनाएँ केवल मंदिरों में ईश्वर प्राप्ति या आध्यात्मिक मुक्ति की प्राप्ति के लिए गायी जाती थीं|बाद में जब मुगल आए तो इसे व्यक्तिगत से सार्वजनिक स्थान में परिवर्तन के साथ ही दरबारों में ले जाया गया|साथ ही शास्त्रीय संगीत की रचनाओं की नई और लोकप्रिय शैलियाँ अस्तित्व में आईं,जैसे ख्याल और ठुमरी,इसने एक तरह से शास्त्रीय संगीत की रचनाओं के प्रदर्शनों

की सूची को समृद्ध किया|इसलिए शास्त्रीय संगीत अपने मूल उद्देश्य से विलग हो दर्शकों के लिए मनोरंजन और आनंद का एक स्रोत बन गया|

कोई भी संगीत समाज में उत्पन्न होता है और उसके बदलते यथार्थ के साथ विकसित होता है। यह अलग-अलग समय में नए को स्वीकार करता है और मौजूदा को संशोधित करता है। स्वीकृति और अस्वीकृति की यह प्रक्रिया किसी भी कला के रूप को लंबे समय तक अस्तित्व में रखती है। इसी तरह संक्रमण के विभिन्न चरणों में भारतीय शास्त्रीय संगीत ने उन तत्वों को अपनाया है जो इसके गुणों पर सवाल उठाते हैं, खासकर इस अत्यधिक तकनीकी दुनिया में।यह शोधपत्र उन परिवर्तनों को इंगित करने और उनका वैध तरीके से विश्लेषण करने का प्रयास करता है।समय के साथ संगीत के क्षेत्र में विभिन्न तकनीकी विकासों ने इसे एक बहुत आवश्यक प्रदर्शन दिया|इसके रूप और उपयोग में निरंतर विकास होता रहा है।इन रचनाओं के प्रदर्शन के लिए मंच भी समय-समय पर बदलते रहे हैं।हम देख सकते हैं कि हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और इसकी रचनाओं के अनुप्रयोग का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है|संगीत निर्देशक,संगीत संयोजक,गायक-गायिका अपनी रचना को पूर्ण रूप से अलग-अलग मंचों के द्वारा विभिन्न प्रारूपों में लागू करने में अपना हाथ आज़मा रहे हैं जैसे-आकाशवाणी,दूरदर्शन,फिल्में,निजी कॉन्सर्ट,निजी एल्बम,फ्यूज़न आदि के साथ यह प्रयोग निश्चित रूप से एक नए दर्शक और वर्ग को पेश कर रहा है।शुद्ध शास्त्रीय संगीत के रूपों का एक विशिष्ट दर्शक वर्ग होता है और उन्हें आम जनता के लिए नहीं माना जाता है,लेकिन ऐसे प्लेटफार्मों और प्रारूपों में हिंदुस्तानी मुखर बंदिशों का उपयोग और अनुप्रयोग एक व्यापक दर्शक वर्ग तैयार कर रहा है।हालाँकि प्रयोग और मूल्यांकन के नाम पर हर चीज को पूरी तरह से उचित नहीं ठहराया जा सकता है।यह दूसरी बात है कि रूढ़िवादी लोग नए प्रयोगों व नयी विधाओं को संकोचपूर्वक स्वीकार करते हैं परन्तु हमें इन परिवर्तनों को स्वीकार करना होगा क्योंकि वे एक निश्चित गतिशीलता का संकेत देते हैं जो सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों के साथ स्पष्ट है|साथ ही साथ भारतीय शास्त्रीय संगीत की शुद्धता और सार का सम्मान करना और उसे बनाए रखना है।इसी सन्दर्भ में सुप्रिद्ध संगीतकार अनिल बिस्वास का कथन है कि संगीतकारों की तथाकथित आधुनिकता उनकी मिली-जुली और हलकी-फुल्की कलाकारी का लक्षण है जो उनपर बाहर से आरोपित है और भीतर जो कुछ है उसे कुचल रही है|आधुनिकता के प्रति इसी पागलपन के कारण हमारे सामने एक बंजर मैदान पड़ा है जो हमारी आँखों का कंटक है जहाँ फलों के उद्यान लगाए जा सकते हैं|नए भारत के लिए नया संगीत ही मूलमंत्र होना चाहिए लेकिन यह सब भारत और भारतीय संगीत की कीमत पर नहीं|

शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार एवं प्रस्तुतीकरण में आकाशवाणी की विशेष भूमिका रही है|संगीत श्रव्य विधा है और ध्वनि के माध्यम से यह घर-घर तक पहुँचने में सक्षम हो सकी|भारत में 1927 में आकाशवाणी की स्थापना के साथ यह एक सशक्त माध्यम सिद्ध हुआ और धीरे धीरे इसके अनेक केंद्र स्थापित होते गए।आकाशवाणी से शास्त्रीय संगीत के कलाकारों के गायन-वादन के कार्यक्रम सीधे प्रसारित किये जाते थे जिसके फलस्वरूप सुप्रतिष्ठित कलाकारों के साथ नवोदित कलाकारों को भी अपनी कला को जन-जन तक पहुँचाने का अवसर मिलने लगा|आकाशवाणी के केंद्रों से शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त सुगम संगीत, लोकसंगीत,चित्रपट संगीत आदि का प्रसारण होता है|संगीतज्ञों की कला को जन-जन से सुपरिचित करने में आकाशवाणी ने एक सशक्त माध्यम के रूप में अहम् भूमिका निभाई है|संगीत सरिता, अनुरंजिनी,अखिल भारतीय संगीत का कार्यक्रम जैसे शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों से जुड़े संगीतकारों को बेहतर मंच प्राप्त हुआ है|आकाशवाणी से शास्त्रीय संगीत की विविध धाराएं नियोजित क्रम में होती रहती हैं|आकाशवाणी 'श्रवण कसौटी' के आधार पर कलाकारों का चयन करती है।आकाशवाणी द्वारा संगीत सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है इससे प्रत्येक कलाकार को अपनी कला को विकसित करने का अवसर मिलता है तथा कलाकारों को मंच के साथ धन व यश अर्जन का अवसर मिलता है|दिवंगत कला-रत्नों की कला तथा स्वर-माधुर्य के रक्षणार्थ तथा लाभार्थ कलाविदों के रिकॉर्ड भी समय-समय पर प्रसारित किये जातें हैं|

शास्त्रीय संगीत में मंचीय प्रदर्शन के क्षेत्र में दूरदर्शन का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है|साहित्य,संगीत तथा अन्य कलाओं के विकास के साथ दूरदर्शन का जन्म हुआ।जन सेवा प्रसारण के प्रति समर्पित दूरदर्शन भारत की राष्ट्रीय प्रसारण सेवा विश्व के सबसे बड़े स्थलीय प्रसारण संगठनों में से एक है।दूरदर्शन का पहला कार्यक्रम 15 सितम्बर 1959 को आकाशवाणी भवन दिल्ली में स्थित एक स्टूडियो से किया गया|1970 के दशक से दूरदर्शन ने अपना नेटवर्क बढ़ाना प्रारंभ कर दिया|वर्त्तमान समय में दूरदर्शन के अनेक प्रसारण केंद्र हैं।शास्त्रीय संगीत से जुड़े कलाकारों के लिए यह वरदान साबित हुआ है|आज शास्त्रीय संगीत से जुड़े कलाकारों के लिए अपने लक्ष्य की ओर निरंतर बढ़ने के लिए हर पायदान पर सुअवसर हैं|जबकि आकाशवाणी द्वारा केवल ध्वनि श्रवण से ही का लाभ ले पाना संभव था वहीँ दूरदर्शन के आने पर कलाकारों को प्रत्यक्ष रूप से देखना व सुनना भी संभव हो सका और शास्त्रीय संगीत से जुड़े कलाकारों को इससे लाभ मिलने लगा|1984 में दूरदर्शन के दूसरे चैनल का प्रसारण शुरू हुआ जिसका उद्देश्य महानगर के विविध वर्गों को कार्यक्रम देखने का एक अन्य विकल्प उपलब्ध करना था|अब देश के अन्य भागों में डिश एंटीना या केबल आपरेटरों के ज़रिये इस चैनल के कार्यक्रम देखे जा सकते हैं|इस चैनल के अतिरिक्त डी डी भारती भारतीय कला एवं संस्कृति का परिचायक है जो सभी संगीत शैलियों के गायन-वादन के कार्यक्रमों को स्थान देता है|इस भांति यह संस्कृति की अमूल्य धरोहर को जन-जन तक पहुँचाने तथा उनमें रूचि जाग्रत करने में महती भूमिका निभा रहा है|आज शास्त्रीय संगीत से जुड़े कलाकारों के लिए अपने लक्ष्य की ओर निरंतर बढ़ने के लिए हर पायदान पर सुअवसर हैं| दूरदर्शन के विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा नवोदित प्रतिभाओं को गायन,वादन व नृत्य कौशल दिखने हेतु उपयुक्त मंच प्रदान किया गया है|

किसी देश की संस्कृति को मानपरक या लक्ष्य भारित व्यवस्था कहा जाता है लेकिन यह कई रूपों में अपनी अभिव्यक्ति पाती है जैसे संगीत,कला,साहित्य इत्यादि| इनमें संगीत का स्थान सबसे पुराना है क्योंकि जबसे जीवन का प्रारम्भ हुआ तभी से संगीत अस्तित्व में आया जबकि भाषा व लिपि के आने पर साहित्य का सूत्रपात हुआ|

साहित्यसंगीतकलाविहीनः

साक्षात्पशुपुच्छविषाणहीनः

-भृतहरि

इसी सन्दर्भ में दिल्ली में भारतीय सरकार द्वारा संगीत नाटक अकादमी की स्थापना किया जाना भी महत्त्वपूर्ण योगदान है|संगीत नाटक अकादमी संगीत,नृत्य, नाटक का राष्ट्रीय संस्थान है जिसकी स्थापना1953 में हुई| इसके पश्चात् भारत के लगभग सभी राज्यों में प्रांतीय अकादमियों की स्थापना की गयी है और इन्हें केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी से जोड़ा गया है|संगीत नाटक अकादमी विविध गतिविधियों के अतिरिक्त संगीत के उठान में उत्कृष्ट योगदान दे रही है|सांस्कृतिक आदान-प्रदान योजना के अंतर्गत देश में ही नहीं,विदेशों में भी कलाकार एकल एवं समूह में टोलियां भेजीं जाती हैं और बाहर से भी कलाकारों को आमंत्रित किया जाता है जिससे संगीत एवं संस्कृति का आदान-प्रदान होता है और कलाकारों को अपनी कला को सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत करने हेतु मंच भी प्राप्त होता है|इस भांति शास्त्रीय संगीत के विकास में संगीत नाटक अकादमी का महत्त्वपूर्ण योगदान माना जाता है|

सिनेमा वर्तमान समय का अति महत्त्वपूर्ण और शक्तिशाली संस्थान है|इस नवीन कला के माध्यम ने जन-जीवन और शैली में क्रांति ला दी है|जवाहर लाल नेहरू ने सिनेमा को विश्व के सबसे अधिक प्रभावित वाले माध्यमों में से एक बताया था|संगीत सिनेमा का एक महत्वपूर्ण अंग है|पिछले लगभग दस दशकों की अवधि में संगीत लोकप्रियता के शिखर पर पहुँच गया है,यह सर्वविदित है|इसलिए फिल्म संगीत आज श्रोताओं एवं दर्शकों के दिलोदिमाग पर अधिकार करने वाला

सर्वश्रेष्ठ माध्यम है|फिल्म संगीत जैसे प्लेटफार्म ने भारतीय शास्त्रीय संगीत के अभ्यास और प्रदर्शन में योगदान दिया और फिल्म संगीत के माध्यम से इसे बहुत बड़े पैमाने पर आम जनता तक पहुँचाया जाने लगा|भारतीय फिल्म संगीत की अनेक उपलब्धियाँ हैं पर उनमे सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय यह है कि फिल्म जगत के बड़े-बड़े संगीतकारों ने शास्त्रीय संगीत का दामन पकड़े रखा|फिल्म संगीत में शास्त्रीय संगीत की परंपरा कायम रखी और उसका पुट देकर भारतीय फ़िल्म संगीत को समृद्ध किया|शास्त्रीय संगीत पर आधारित फिल्म में संगीत देना अपेक्षाकृत कठिन होता है क्योंकि शास्त्रीय संगीत में जनसाधारण की अधिक पहुँच नहीं होती है परन्तु सहज एवं सरल रूप में प्रस्तुति से शास्त्रीय संगीत जनसाधारण की रूचि में विकसित किया जा सकता है|शुरू से ही अनेक फिल्मी गीतों का आधार भारतीय राग रहे हैं|कई बंदिशें भी अपने पारंपरिक प्रारूप में फिल्मों में एक विशेष क्रम को प्रदर्शित करने के लिए सुनी जा सकती हैं|फ़िल्म संगीत में विशिष्टता पैदा करने के लिए अनेक संगीतकारों ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है|फ़िल्म संगीत की ऐतिहासिक परंपरा में वह प्रतिभाशाली पीढ़ी जिसने फ़िल्म संगीत की मर्यादा व उच्च को कायम रखा,विकसित किया और एक नयी दिशा देने की प्रेरणा दी,आगामी फ़िल्म संगीत जगत हेतु मज़बूत आधार बनी|

भारतीय फिल्म संगीत जगत के प्रारंभिक चरणों में1930 के दशक के पूर्वार्द्ध में तिमिर बरन,रायचन्द बोराल,पंकज मालिक जैसे शास्त्रीय संगीत के ज्ञाता संगीतकार फ़िल्म से जुड़े हुए थे|इनके अतिरिक्त सरस्वती देवी,अनिल बिस्वास,गुलाम हैदर,खेमचंद प्रकाश,नौशाद,सलिल चौधरी,वसंत देसाई,शंकर-जयकिशन,कल्याणजी-आनंद जी,मदनमोहन,रोशन,जयदेव आदि संगीतकारों ने फिल्म संगीत में शास्त्रीय संगीत का प्रयोग किया| भारतीय फिल्म संगीत जगत के प्रारंभिक चरणों में गायक सहगल ने फ़िल्म संगीत का स्तर निरंतर ऊँचा उठाये रखा और उसमें शास्त्रीय संगीत का स्थान निर्धारित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया|उनके गायन की सबसे बड़ी विशेषता सहजता और स्वर लगाव की स्वाभाविकता थी|फिल्म संगीत में 'बालम आय बसो मोरे मन में',ठुमरी शैली में 'बाबुल मोरा नैहर छूटो ही जाए','दिया जलाओ जगमग','सप्त सुरन तीन ग्राम'और इसी श्रंखला में 'जा जा रे बालमवा','झनक-झनक पायल बाजे','जा तोसे नहीं बोलूँ,'जाग दर्दे इश्क जाग''गरजत बरसत सावन आयो रे','लागा चुनरी में दाग','विकल मोर मनवा उन बिन हाये','काहे तरसाए जियरा','मन तड़पत हरि दर्शन को आज'जैसी अनेक अविस्मरणीय रचनाएँ रचनाकारों की शास्त्रीय संगीत में गहरी पैठ के परिचायक हैं|फिल्म संगीत जगत के आगामी दशकों में सहगल,लता,आशा,मोहम्मद रफी,मन्ना डे जैसे कई दिग्गज कलाकारों ने फिल्म-संगीत में शास्त्रीय संगीत के इस सफर में मील के पत्थर की भूमिका निभाई|तकनीकी उपलब्धि के इस युग में हम वर्तमान फिल्मों के विभिन्न गीतों को स्पष्ट रूप से शास्त्रीय संगीत की रचनाओं और तत्वों का उपयोग करते हुए देख सकते हैं,जबकि उनकी प्रस्तुति और संगीत व्यवस्था में बदलाव हुआ है|जैसे 'अलबेला साजन आयो री','रस के भरे तोरे नैन','जिया जले जां जले नैनों तले',ठुमरी जैसे 'हमरी अटरिया पे आजा रे सांवरिया' स्पष्ट रूप से शास्त्रीय संगीत के अनुप्रयोग और प्रस्तुति के उदाहरण हैं।यह एक बदलाव का संकेत है कि फिल्म एक मंच बनी हुई है जहां शास्त्रीय संगीत बहुत अधिक प्रयोग और रचनात्मक कार्य के साथ सुनाया और दिखाया जाता है|

सूचना प्रौद्योगिकी के प्रसार और तेजी से बदलती वैश्वीकृत दुनिया के साथ हम समकालीन भारत में कई संगीत शैलियों के सह-अस्तित्व को देखते हैं|रॉक,हिप-हॉप,जैज़ आदि इन पश्चिमी संगीत रूपों के अलावा पारंपरिक रूप से ख्याल,गीत,ठुमरी,भजन,ग़ज़ल,कव्वाली इत्यादि भी समकालीन संगीत परिदृश्य में अपना स्थान पाते हैं|यह विभिन्न प्रारूपों और रचनाओं में स्पष्ट है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत गैर पारंपरिक और प्रयोगात्मक सेट अप में प्रस्तुत किया जा रहा है|उदाहरण के लिए,कोक स्टूडियो,बॉलीवुड फ्यूजन बैंड, स्वतंत्र कलाकारों और निर्माताओं का काम लगातार भारतीय शास्त्रीय संगीत के तत्वों को अन्य शैलियों के साथ जोड़ने की कोशिश कर रहा है जिससे शास्त्रीय संगीत की लोकप्रियता और प्रदर्शन बढ़ रहा है।इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तथा सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के आगमन का शास्त्रीय

संगीत,भारतीय समाज और संस्कृति पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है|इसने शास्त्रीय संगीत का प्रदर्शन भारतीयों तक बहुत अधिक और भारी मात्रा में पहुँचाया है|इंटरनेट के प्रसार ने अब संगीत के अनुभव को पूरी तरह से बदल दिया है और ग्राहकों के लिए विकल्प बढ़ा दिए हैं।यह आर्थिक रूप से व्यवहार्य हो गया है।इंटरनेट के प्रसार के साथ कई अन्य ऑनलाइन सेवाएं अस्तित्व में आई हैं,जैसे यूट्यूब,माइ स्पेस,फेसबुक जैसी साइटें सहज ही अन्य संगीतकारों को जोड़ती हैं।ऐसी साइटों पर संगीत सामग्री अपलोड भी की जा सकती है|इन नए विकासों ने निश्चित रूप से शास्त्रीय संगीतकारों को संगीत की अन्य शैलियों के साथ सहयोग करते हुए प्रस्तुत करके हमारी शास्त्रीय विरासत की ओर फिर से ध्यान आकर्षित किया है तथा जन सामान्य को आधुनिक भारतीय संगीत का अनुभव कराया है|वर्तमान युग क्रांति का युग है|आज का समाज प्रगतिशील है|शिक्षण व्यवस्था में संगीत का समावेश,सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का आगमन जैसे परिवर्तित सामाजिक ढांचे ने संगीत को घराना परंपरा से बाहर स्थान दिलाया है|स्पर्धा के इस युग में अपना नाम और स्थान बनाने की चाह,कुछ नया करने की प्रवृति तथा अधिकाधिक श्रोताओं को आकर्षित करने की इच्छा आज के कलाकारों को वैश्विक स्तर पर अपनी कला को प्रदर्शित करने के अवसर देती है|उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत(कंठ) में मंच प्रदर्शन के क्षेत्र में पं.भीमसेन जोशी,पं.जसराज,पं.राजन-साजन मिश्रा,उस्ताद राशिद खान,बेगम परवीन सुल्ताना,किशोरी अमोणकर,शुभा मुद्गल,प्रभा अत्रे,अजय पोहनकर आदि कलाकारों ने अपनी पहचान बनाई है| कला से रसास्वादन किस सीमा तक संभव है,इसका स्पष्ट उल्लेख जॉन हैरिसन के कथन में मिलता है-

The artist himself alone can have the experience of burning fire(the joy of creation)whereas the spectators (audience) can warm their hands by standing near the fire.

-John Harison

हर युग में कला के क्षेत्र में नए प्रयोग होते रहते हैं और ऐसी धारा किसी बिंदु पर आकर रूकती नहीं है|बदलते हुए समय के साथ जनसाधारण की रुचियाँ व मनोवृत्तियां बदलती रहतीं है|उसी के अनुरूप साहित्य,संगीत व कलाओं को बदलते रहना चाहिए| वास्तव में,परंपरा और परिवर्तन का समावेश ही किसी कला को उन्नति की ओर अग्रसर कर सकता है|परंपरा निरंतर प्रगतिशील बदलावों के साथ प्रेरणा पाती है और विधियाँ कालांतर में नए प्रयोगों द्वारा संपुष्ट होतीं जातीं हैं|अब जनसाधारण के साथ संगीत का भी घनिष्ठ संबंध स्थापित हो गया हैऔर सांस्कृतिक प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है|समाज की बदलती रुचियों और परिस्थितियों के साथ हर कलाकार को अपनी कला के उन्नयन हेतु हर संभव प्रयत्न करना चाहिए| मानकों की परिवर्तनशीलता और उसके मर्म को पहचान कर कला को प्रगति की ओर गतिमान करना चाहिए|

संदर्भ:

1. डॉ.राधिका शर्मा,'भारतीय संगीत को मीडिया और संस्थानों का योगदान',संजय प्रकाशन,दिल्ली.
2. सुमन पाटणकर,'रेडियो और संगीत',हमारा संगीत,संगीत कला केंद्र,बुलंदशहर,1983.पृ.134.
3. डॉ.शंकर लाल मिश्र,'मंच प्रदर्शन,'संगीत निबंध संग्रह,चौखम्बा संस्कृत भवन,वाराणसी,पृ.206.
4. कल्याणजी-आनंदजी,'भारतीय फिल्मों में संगीत की अनिवार्यता' फिल्म संगीत, हाथरस,अक्टूबर1967, पृ 3.
5. Vishnudas Shirali Sargam, 'An Introduction to Indian music', Shakti Malik Abhinav Publications, New Delhi1977 P.7.
6. Raju Bhartan,'Hindi Film Music today',Illustrated Weekly,31 December,1967. P.49.
7. Anil Biswas,'The wealth of Indian classical and folk music and its place in films', paper read by Anil Biswas in the seventh session of Sangeet Natak Academy ,1965.
8. Doordarshan:A Legacy of Indian Television,short film on youtube.
9. Samidha Vedbala,भारतीय शास्त्रीय संगीत: विशेषताएं और रुझान, www.shadajmadhyama.com